



हिमालयी
द्वैमासिक

बच्चों का अखबार

RNI No. UTTHIN/2003/10745 वर्ष 10, अंक 114, पृष्ठ 8, देहरादून, जनवरी-फरवरी, 2022 1995 से सतत प्रकाशित

दीदी सुधा



प्यारे बच्चों,

नव वर्ष की प्यारभरी, दुलार भरी और स्नेह भरी शुभकामनाएँ।
मेरे पाठकों के लिए वर्ष 2022 स्वास्थ्यवर्धक व खुशियों भरा हो यही
कामना करती हूँ। बच्चों को वैक्सीन लगानी शुरू हो गई है। बच्चों का
स्वास्थ्य हम सब की प्राथमिकता है पर बच्चों को भी सहयोग देना
होगा। निर्देशानुसार पालन करना होगा। ऐसा मैं मानती हूँ।

कई बार हम लोग जिंदगी को लेकर बहुत निराश हो जाते हैं। मुझे
आज यह पंक्तियाँ पढ़ने को मिली। अच्छी लगी। सोचा तुम्हें भी बताऊँ →

- 😊 जिंदगी माँ जैसी होनी चाहिए
- 😊 सबको बस यही लगता है कि किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता
- 😊 मेरे पास सबसे अच्छी है।
- 😊 दूसरों के पास नहीं है।
- 😊 काश हम सब ऐसा सोचते।

इस अंक में हमारे बहुत सारे पाठकों ने चर्चा की इस विषय पर - "वर्ष 2021 में क्या अच्छा लगा और क्या अच्छा नहीं लगा? कुछ पाठकों के विचार इस अंक में शामिल किए गए हैं और कुछ के अगले अंक में किए जाएंगे। इसलिए बच्चे निराश ना हों। समय-समय पर मैं बच्चों के मन को टटोळती हूँ और जानने की कोशिश करती हूँ कि वे क्या सोचते हैं, उनकी विचारधारा क्या है। तुम सब मेरे लिए बहुत प्रिय हो इसलिए तुम्हारी ख़ुशी, अनुभव व भावनाओं को जानना मेरे लिए बहुत आवश्यक हो जाता है। तुम सब अपनी जिम्मेदारी बेखुबी निभाते हो। इसमें तो कोई शक नहीं है।

तुम सब खुश रहो और अपने माता-पिता, भाई बहन के साथ-साथ अपनी धरती माँ के लिए कुछ अच्छा करने की पहल भी करो। इसी आशा के साथ फिर मुलाक़ात होगी।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

स्वास्थ्य की थाली

मेँ ओमीक्रोन (Omicron) आ गया हा! हा! हा!



लक्षण
● खाँसी, बुखार, जुकाम, थकान
● बहती नाक, सिरदर्द, दर्दनाक आना और गले में खराश

ओमीक्रोन जिस तेज़ी से बढ़ रहा है उतनी ही तेज़ी से इसके लक्षण भी बढ़ रहे हैं। जैसे →

● आँखों का लाल होना ● पानी आना और दर्द होना

● त्वचा पर फिटी या छमोरी ● हाथ पैर में सूजन

● त्वचा का लाल और खुजलीदार होना



पर्यावरण विज्ञान और नाचार

कौन सा है वह देश जिसकी
कोई राजधानी नहीं है ?

नदी उत्सव
2021

नारू ऐसा राष्ट्र है जिसकी कोई राजधानी नहीं है। यह विश्व का सबसे छोटा दीप है। और दुनिया का सबसे छोटा स्वतंत्र गणराज्य भी। यह दक्षिणी प्रशान्त महासागर में स्थित है। नारू (Nauru) को 'सुखद दीप' (Pleasant island) भी कहते हैं। क्योंकि यहां लोग सुख-चैन से आराम की जिंदगी बिताते हैं। नारू का क्षेत्रफल लगभग 21 वर्ग किलोमीटर है। 2018 की जनसंख्या के अनुसार यहां की जनसंख्या 11 हजार के करीब है। यहां नारिमत बहुत होता है। नारू में कोई सेना नहीं है। ऑस्ट्रेलिया सुरक्षित और स्वस्थ रहने में उनकी मदद करता है। यहां पहले 12 कबीलों का राज था। यह देश माइक्रोनेशियंस और पालिनेशियंस द्वारा बसाया गया था।



इसका आयोजन जल शक्ति मंत्रालय, परंपरा मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय और स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रव्यापी मिशन द्वारा सामूहिक रूप से 16 दिसंबर 2021 से 23 दिसंबर तक आयोजित किया गया। चार विषयों पर यह उत्सव आधारित था →
① स्वच्छता ② प्रकृति और पारिस्थितिकी ③ देश भाक्ति ④ भाक्ति और आध्यात्मिकता भारत में 22 राज्यों और 170 जिलों में यह कार्यक्रम आयोजित किए गए। सार्वजनिक-नदी कनेक्शन को मजबूत करने के लिए हर साल राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा नदी उत्सव मनाया जाता है।

कौन से पौधे को छुओगे, तो गवाओगे जान ?

जाइंट लॉगवूड (Giant hogweed) एक ऐसा पौधा है जिसमें जहर होता है। आम भाषा में इसे 'किलर ट्री' (Killer tree) कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम है 'हेराकलियम मैन्टेगाझियन' (Heracleum mantegazzianum)।

इसे एक हानिकारक खरपतवार (weed) माना जाता है। यह गाजर परिवार से है। यह 14 फीट तक लंबा हो सकता है। यह देखने में बहुत ही सुंदर होता है। सफेद फूलों के बड़े समूह एक छतरी पैटर्न में पौधे के शीर्ष पर होते हैं, जिसमें बैंगनी धब्बे और सफेद बाल होते हैं।



वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी इसके जहर को मारने की कोई दवा नहीं बन पाई है।

न्यूयार्क, पेनसिल्वेनिया, ओहियो, मैरीलैंड, वाशिंगटन, मिचिगन, टेक्सास में यह पौधा मिलता है।

यह पौधा इंसानों को कैसे नुकसान पहुंचाता है ?

विशाल लॉगवूड के सैप (Sap) में जहरीले रसायन होते हैं जिन्हें फोटोसेंसिटाइजिंग पुरानोकोमार्निन के रूप में जाना जाता है। जब ये रसायन मानव त्वचा के संपर्क में आते हैं, तो यह त्वचा की प्रतिक्रिया का कारण बन सकते हैं जो प्रकाश के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। इसे छूने से हाथ पर जलाने हो जाते हैं। इतना जहरीला है यह। और 24 घंटे के अंदर शरीर पर चर्दपाम दिखने लगते हैं। और कुछ घंटों में त्वचा जलने लगती है। फिर मौत भी हो जाती है।

गंगा यमुना बहन बहन कैसे? (भाग-1)

मैं, गंगा
भारत की
सबसे लम्बी
नदी हूँ। मैं
इतनी लम्बी
कैसे बन

पाई? सोचती हूँ

मैं, कई बार। मेरी यात्रा

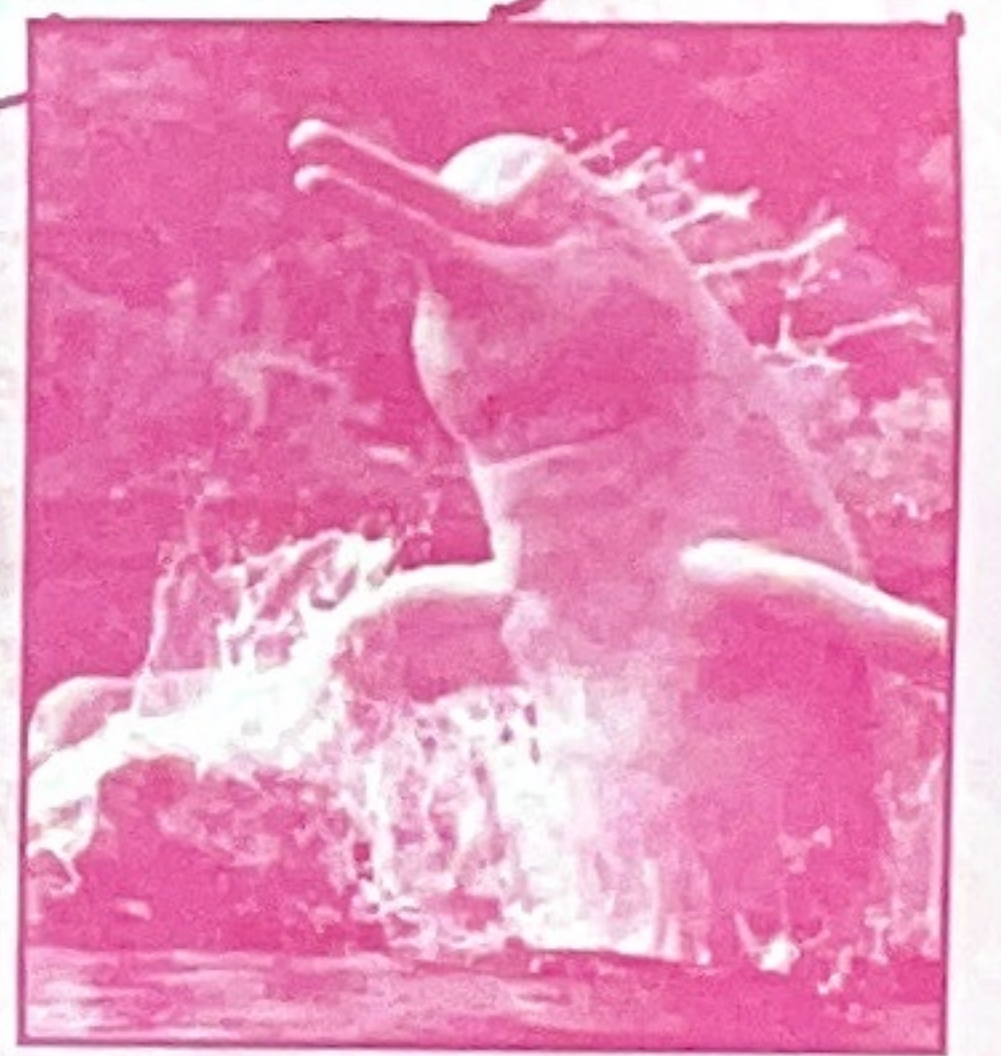
में मेरी सहायक नदियों, यानी मेरी छोटी
बहनों का योगदान रहा है। यदि वे अपने
जल को मेरे जल में शामिल नहीं करती,
तो शायद मैं भी बहन सरस्वती नदी
की तरह अंदर कहीं लुप्त हो जाती।

इनकी मदद से मैंने गौमुख से बंगाल की खाड़ी तक का 2525 km
का लम्बा सफर तय किया है। 2008 में मुझे राष्ट्रीय नदी का दर्जा
मिला। उत्तराखण्ड हाईकोर्ट ने 2017 में मुझे और बहन यमुना को
जीवित व्यक्ति का सम्मान भी दिया। मुझे भी वे सब हक दिए गए
हैं जो जीवित इंसान के पास हैं। दिल से शुक्रगुजार हूँ मैं तुम
मानवों की।



वैसे तो मैं दो देशों से गुजरती हूँ। यानी भारत
और अपने पड़ोसी देश बांग्लादेश से। मेरा उद्गम भारत
में होता है, फिर बांग्लादेश जाती हूँ और फिर बंगाल
की खाड़ी में गिर जाती हूँ। यहां मेरी यात्रा समाप्त हो
जाती है। अपने देश में मैं पांच राज्यों - उत्तराखण्ड, उत्तर
प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, और पश्चिम बंगाल से होकर
बंगाल की खाड़ी पहुंचती हूँ। मेरी बेटी जैसी "गंगा
डॉल्फिन" को भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया
गया है। तुम सब कहीं यह तो नहीं सोच रहे कि

मैं यह सब क्यों बता रही हूँ? बताना
पड़ता है मानव। कहीं तुम भूल ना जाओ, यह
सोचकर मैं बीच-बीच में दोहराती हूँ, ही! ही! ही!
आज मैं अपनी बहन यमुना के बारे में बताना चाह रही
हूँ। बहन यमुना मुझे बहुत प्रिय हैं।



यमुना धरती पर कैसे आई?

हम दोनों बहने उत्तराखण्ड से ही हैं। एक ही जन्मभूमि हैं हमारी।
बहन यमुना यमनोत्री हिमनद (glacier) (उत्तरकाशी से 30 कि॰मी॰ उत्तर गढ़वाल
में) से निकलती है। जो कि गंगोत्री हिमनद के बगल में है।
बहन यमुना मेरे समांतर (parallel) चलती है। यह
भी मेरी तरह भारत की बहुत ही प्राचीन नदी है।

यमुना नदी के प्राचीन नाम क्या हैं?

कहते हैं आसित ऋषि ने सबसे पहले यमुना नदी को
खोजा था। उन्हीं के नाम पर यमुना को 'आसित' भी
कहते हैं। कई लोग यमनोत्री भी कहते हैं। कालिंदी नाम से भी जानी जाती है बहन
यमुना।



उत्तर प्रदेश के कई ग्रामीण इलाकों में बहन यमुना को 'जमुना' कहते हैं। 'यमी' भी कहते हैं यमुना को। शॉर्टकट नाम, जैसे तुम मानवों के होते हैं। हु! हु! हु!

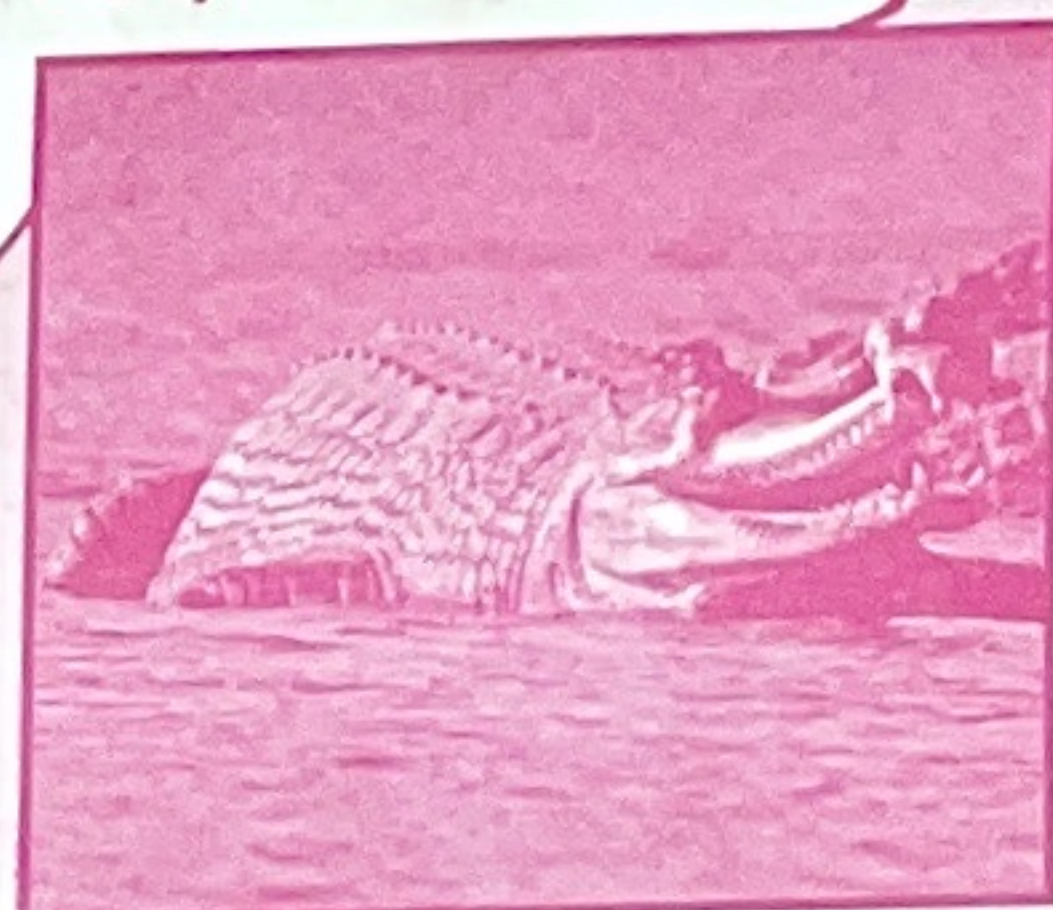
यमुना किस परिवार से है? (यमुना का पौराणिक पक्ष)

बहन यमुना के पिता सूर्य हैं। और माँ हैं देवी संजना। मार्कण्डेयपुराण की कथा के अनुसार देवी संजना (संवा) विश्वकर्मा की पुत्री थी। उनका विवाह सूर्य से हुआ। इन दोनों की पुत्री यमुना हैं। यमुना के भाई हैं यम और शनी। बहन यमुना के पति हैं श्री कृष्ण। बहन यमुना और भाई यमराज दोनों का स्वरूप काला है। मां संजना श्याम वर्ण की थीं। इस वजह से ही दोनों भाई बहन का रंग भी श्याम वर्ण है। कहते हैं उनके भाई यमराज ने उन्हें वरदान दिया था कि जो व्यक्ति यमुना में स्नान करेगा उसे ममलोक नहीं जाना पड़ेगा। राज में यमुना अपने पूरे आध्यात्मिक वैभव के साथ झुक गई हैं। कृष्णवतार के समय भी यमुना वहीं थीं। आत्मिक रिश्ता जो है दोनों का।



बहन यमुना की सहायक नदियाँ कौन सी हैं?

चंबल, बेतवा और केन बहन यमुना की सहायक नदियाँ हैं।
चंबल → बहन यमुना की छोटी बहनें यानी सहायक नदियाँ हैं जो उसके जल में बढ़ोतरी करती हैं और खुशी-खुशी अपने जल को बहन यमुना के जल में शामिल कर देती हैं। चंबल बहन यमुना की सबसे पहली सहायक नदी है। यह मध्य प्रदेश के इंदौर में जनपाऊ पहाड़ी से निकलती है और साथ ही गीता नदी उज्जैन के पास काकरी पहाड़ी से निकलती है। और चंबल में मिल जाती है। चंबल इटावा में यमुना से मिलती है। और हाँ, घाड़ियाल भाई चंबल में ही पारे जाते हैं। उन्हें चंबल में रहना बहुत आता है। चंबल बहन यमुना की सबसे लम्बी सहायक नदी है। ठीक वैसे ही जैसे गंगा की यमुना है।



बेतवा → बहन यमुना की दूसरी सहायक नदी है बेतवा। यह मध्य प्रदेश के विंध्या पर्वत से आती है और हमीरपुर में यमुना में मिल जाती है।

केन → बहन केन यमुना की तीसरी सहायक नदी है। मध्य प्रदेश के केन मैसूर पहाड़ी से आती है और बाँदा में यमुना से मिलती है। इस तरह बहन यमुना की तीनों सहायक नदियाँ चंबल, बेतवा, और केन यमुना में शामिल हो जाती हैं। प्रयागराज, इलाहाबाद (उज्जैन) में गंगा और यमुना का मिलन होता है। वही हमारी छोटी बहन सरस्वती भी हमसे मिलती है। इस मिलन को त्रिवेणी संगम कहते हैं। बहन सरस्वती तुम्हें दिखाई नहीं देगी क्योंकि वह बहुत सारी पहलें विलुप्त हो गई थी।



प्रयाग का अर्थ होता है नदियों का संगम । जहां संगम होता है, उस स्थान का महत्व बढ़ जाता है, धार्मिक रूप से । कितना शुभ है यह स्थान जहां आप तीनों प्राचीन नदियों के दर्शन कर सकते हैं । मैंने देखा है तुम सब मानव प्रयागों में पूजा, अर्चना और स्नान भी करते हो ।

6-6 महीने में द्योटा कुंभ होता है और बारह साल में बड़ा कुंभ । इतने समय बाद हम बहनों का मिलना होता है । वे भी अपने परिवार (सहायक नदियों) को लेकर आती हैं । सबसे मिलना हो जाता है । तो जश्न तो बनता है । एक बात तो तय है कि मुझ गंगा की स्वच्छ व निर्मल बनाने से पहले मेरी सहायक नदियों पर भी प्रकाश डालना होगा । उनकी स्वच्छता व निर्मलता भी महत्वपूर्ण है । समझे मानव !

००० डा० सुधा शर्मा



2021 में अच्छा लगा

पृष्ठ सं. ① का शेष भाग . . .

2021 में अच्छा नहीं लगा

2021 में क्या अच्छा लगा

- ① मुझे 2021 में सरकार का स्कूल खोलने का डिजिटल बहुत अच्छा लगा । ऑनलाइन पढ़कर सभी बच्चे बहुत आलसी हो गए थे ।
- ② मुझे यह अच्छा लगा कि भारत में कई लोगों को वैक्सीन लगा चुकी है ।

2021 में अच्छा नहीं लगा

पूरे साल में अभी तक भारत में इतने सारे ऑक्सीजन के मरीज आ चुके हैं पर इलेक्शन के चक्कर में कदम उठाए नहीं गये हैं ।



★ Bhoomika Pal, class -9,
village Gularghati,
G.G.H.S. Shamshegarh
Dehradun.

द्योटा कंजासा



★ आंचल निषाद, कक्षा-10
श्रीधरपुर इन्टर कॉलेज
गांव द्योटा कंजासा
उ० प्रदेश

अच्छा लगा

2021 में

अच्छा नहीं लगा

- ① देश में कोरोना कम हुआ और पापा घर आ गये ।
- ② 2021 में स्कूल भी खुल गये और हम स्कूल जाने लगे ।
- ③ घर में सब लोग एक साथ में थे और दोस्तों के साथ मस्ती करने में बहुत मजा आया ।

★ नैहा निषाद, कक्षा-5,
गांव-बसवार, देव टपोरस
पाठक स्कूल, उ०प्र०

- ① अमीर चीफ श्री विपिन रावत जी की मृत्यु ।
- ② पढ़ाई अच्छे से नहीं हो पाई और स्कूल भी अच्छे से नहीं जा पाये । और स्कूल की फीस बढ़ा दी गई । ③ घर में काम की लेकर बहुत दिक्कत होती थी ।

बसवार

सभी बच्चों की प्रतिक्रियाओं को शामिल किया जाएगा । कुछ बच्चों की प्रतिक्रियाएँ अगले अंक में शामिल की जाएंगी ।
- सुधा दीदी



6

बच्चों की प्रतिक्रियाएँ



अच्छा नहीं लगा

- 1 कोरोना काह में हमारे स्कूल बंद रहे। जिससे हम अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके।
- 2 हम किसी रिश्तेदार से मिलने नहीं जा सके।
- 3 हमारी जीविका चलाने के साधन पर भी प्रभाव पड़ा।

अच्छा लगा

- 1 नदियों का जल अपने आप ही साफ सुधरा दिखने लगा
- 2 वातावरण भी बहुत स्वच्छ हो गया था।

★ अजय कुमार
कक्षा-8, पू. मा.

वि. निवाड़ी रवावर, गांव निवाड़ी रवावर, बु. शहर, उ.प्र.



बिजौरी

वर्ष 2021

क्या अच्छा लगा?
क्या अच्छा नहीं लगा?



अच्छा लगा 2021 में लॉकडाउन लगने के कारण प्रकृति का यह रूप देखने को मिला जो पहले कभी नहीं देखा। इस लॉकडाउन में सभी कारखाने, सभी वाहन न चलने के कारण वायु शुद्ध व जल शीतल हो गया।

अच्छा नहीं लगा 2021

में बच्चों की पढ़ाई का अत्यधिक नुकसान हुआ। कई गरीब लोगों को लॉकडाउन के कारण खाना भी नहीं मिला। महामारी के कारण कई लाख लोगों की मृत्यु भी हुई।



★ देव्यानी
कक्षा-7
शिव विद्या मंदिर, गांव रावती, बिजौरी उ.प्र.

अच्छा नहीं लगा = स्कूल बन्द थे, रिश्तेदारों से नहीं मिल पाए।

अच्छा लगा = स्कूल में पढ़ाई दोबारा शुरू हुई।

- 1 हमारे आस-पास गन्गी साफ हुई।
 - 2 हमारा देश तरक्की कर रहा है।
- ★ महेश कुमार, कक्षा-8,
गांव - निवाड़ी रवावर
पू. मा. वि. निवाड़ी रवावर,
बु. शहर, उ.प्र.



सुजाबाद

अच्छा लगा

- 1 घर पर ट्यूशन पढ़ना अच्छा लगा है। अब यह मेरे रूटीन में होम वर्क करना आदत बन गयी। 1 मैं बैट-बॉल खेलने से डرتी थी। मेरा डर भाग गया। मैं अब बैट-बॉल खेल पाती हूँ।
- 2 लॉकडाउन में मास्क लगाना, स्वच्छ रहना अच्छा लगा है।
- 3 स्कूल का बंद होना अच्छा नहीं लगा।

★ यशवी निषाद
कक्षा-6,
सरस्वती शिक्षा निकेतन,
गांव - गंगा गाम,
सुजाबाद,
बनारस, उ.प्र.



अच्छा लगा

- 1 2021 में स्वच्छता जागरूकता घर-घर अच्छा लगा।
- 2 लॉकडाउन के समय पिता-माता व बच्चों संग खेल खेलना बहुत अच्छा लगा।
- 3 घर पर पौधा लगाना सीखा हूँ, स्वच्छ रहना सीखा हूँ।



अच्छा नहीं लगा

1 लम्बे समय तक स्कूल का बंद हो जाना अच्छा नहीं लगा।

1 कोरोना महामारी के समय गलत सूचना लोगों तक जाना अच्छा नहीं लगा।

★ श्रौंठा निषाद, कक्षा-6,
सरस्वती शिक्षा निकेतन,
गांव - नगर पंचायत, सुजाबाद
वाराणसी, उ.प्र.



- स्कूल बंद होना अच्छा नहीं लगा।
- घर पर खेलना अच्छा लगा।
- ट्यूशन पढ़ना अच्छा लगा।
- दोस्तों से दूर होना अच्छा नहीं लगा।

★ राजेश्वरी, कक्षा-4, कम्पोजिट विद्यालय बहादुरपुर, सुजाबाद, गंगा गाम, वाराणसी

2021 में अच्छा लगा

2021 में अच्छा नहीं लगा

7

अच्छा लगा 2021 में

- ① हम सभी को कोविड टीकाकरण लगा।
- ② हमें यह शिक्षा मिली कि हमें बड़ों का आदर और सम्मान करना चाहिए।

अच्छा नहीं लगा 2021 में

- ① हमारा स्कूल बंद रहने से हमारा बहुत नुकसान हुआ।
- ② बाढ़ आने से खेती डूब गया।
- ③ सब्जी का मण्डी भी कोरोना काल में बन्द चल रहा था।

★ आशीष राजभर,
S.N.I.C Kushi
Patna, गाजीपुर
कक्षा - 8, गंगा नगर,
उ.प्र.

गाजीपुर

ब्यावर

अच्छा लगा 2021 में

- ① घर के सभी सदस्यों ने साथ में समय बिताया।
- ② मैंने नई-नई चीजें बनाना सीखा। जो सीखने का पहले मेरे पास समय नहीं था।
- ③ मैंने अपनी चित्रकला में भी सुधार किया।

अच्छा नहीं लगा 2021 में

- ① स्कूलों का बन्द होना।
- ② अपने रिश्तेदारों से न मिल पाना।
- ③ दुर्द्विषों में घूमने न जा पाना।
- ★ दवि सौर्न, कक्षा - 8,
दिल्ली पाब्लिक स्कूल, ब्यावर,
राजस्थान

△ लॉकडाउन में स्कूल बन्द था, बाजार भी।

△ हम सबने घर की अच्छे से सफाई करना सीखा।

△ हम सब ने बच्चे और बूढ़े को मास्क और हाथों के लिए सैनिटाइजर दिए।

△ हम भीड़ वाली जगहों में नहीं जाते थे।

△ हमने मास्क लगाना सीखा।

★ मधु, कक्षा - 6, उच्च प्रा. वि. कछवाँ,
ग्राम बैरनी, जिला मिर्जापुर, उ.प्र.

मिर्जापुर

2021 में अच्छा लगा

□ मुझे कोविड के केस कम होना अच्छा लगा।

□ स्कूल वापस खुल जाना अच्छा लगा।

ऑनलाइन क्लास में कुछ समय नहीं आ रहा था। □ कोविड में लोग अपने घर सुरक्षित पहुंचे मुझे अच्छा लगा।

2021 में अच्छा नहीं लगा

□ देश में कोरोना जैसी महामारी आई मुझे अच्छा नहीं लगा।

□ लोगों की कोविड से मृत्यु हो गई, परिवार वाले अपनों से दूर हो गए मुझे अच्छा नहीं लगा। □ स्कूल बन्द हो गए थे हम अपने दोस्तों से दूर हो गए थे। खेल कूद सब बन्द हो गए थे, मुझे अच्छा नहीं लगा।

शमशेरगढ़

★ बंशिका, कक्षा - 9, रा.क.उ.मा.
वि., शमशेरगढ़, गांव शमशेरगढ़
देहरादून

अच्छा लगा
2021 में

① घर के सभी सदस्य मिलकर एक साथ रहें।

② सब एक दूसरे की मदद करते थे।

③ हर रोज माँ हर सदस्य की जरूरत का खयाल रखती थी।

④ छोटे बच्चों ने भी काम की अहमियत को समझा।

अच्छा नहीं लगा 2021 में

① घर में छोटी-छोटी बात पर तनाव हो जाता था।

② हर तरफ एक डर सा लगा रहता था कि किसी को कुछ हो ना जाये।

③ बच्चों ने मोबाइल का गलत इस्तेमाल शुरू कर दिया।

④ घर में रहने से बच्चों की सेहत पर भी असर पड़ा।

⑤ सबसे बुरा लगा स्कूल का बंद होना और मित्रों से ना मिलना।

⑥ बहुत दुख हुआ जब कॉलोनी में कोरोना से मृत्यु हो गयी।

★ चेतना शर्मा,
कक्षा - 7, मंगल न्यूट्स
स्कूल, ब्यावर, राजस्थान

हम पृथ्वी की संतान

हम हैं पृथ्वी की संतान
5 जून 1972 को
आया पर्यावरण दिवस का नाम
जैविक और अजैविक जीवमंडल
का हुआ नया निर्माण

दो शब्दों के योग से
बना परि + आवरण का नाम
इस कूड़ा करकट से
हो रहा सृष्टि का विनाश
विश्व भर में वनों का विनाश
यह हमारे सर्वनाश का प्रतीक
गंगा, यमुना आदि नदियां
हो रही कितनी प्रदूषित

मत करो इस सृष्टि का विनाश
हम तो पृथ्वी की संतान
क्या लाभ मिलेगा इससे
जब हो जाएगा पृथ्वी का सर्वनाश

मत करो ऐसे काम
फिर लगाओ पेड़-पौधे
और बन जाओ
स्वस्थ इंसान।

हम हैं पृथ्वी की संतान।



★ राधिका मन्वाल
कक्षा-9, रा.क.उ.
मा.वि., शमशेरगढ़,
देहरादून

एक शहर बनारस

लिखती हूँ -

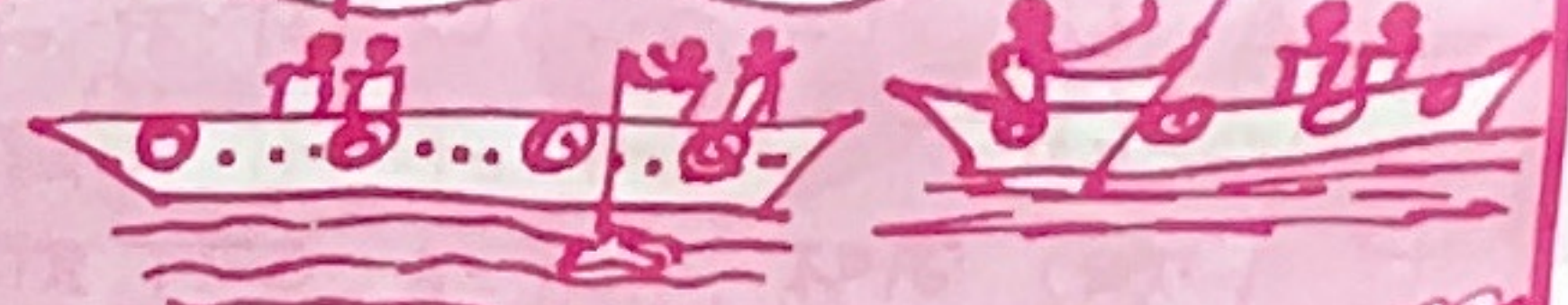
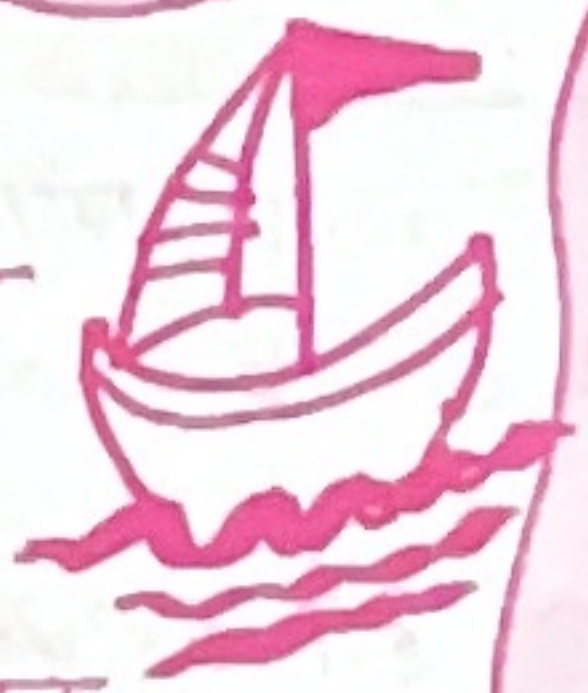
एक शहर बनारस
कितना सरस
जैसे हो अंतस्-
इतिहास से पुरातन
परंपराओं से प्राचीन
काशी विश्वनाथ के दर्शन
प्रभु-मिलन सा समरस
जीवन-दर्शन में घाट उतरना
कितना उदार
जैसे जीवन निरंतर नौका-विहार।

धू-धू कर जलती निषेध काया
उठती लपटों में लिपटी
परमात्मा से मिलने की यात्रा में तप
आस्थियों में शेष रही जो
गंगा में हो समाहित अनंत यात्रा में सहचर
पुनः चल पड़ने को उद्यत....

एक शहर बनारस

एक मेरा मन बनारस।

★ श्रीमती अम्बीता मैठाणी
कवयित्री व लेखिका
देहरादून



चुटकुले

बेटा बाप से कहता है - पापा
मेरे टेलीफोन की तार इतनी
लम्बी क्यों है ?

बाप = इतना भी नहीं पता अगर
दो लोग आपस में बातिया रहे हों
तो कोई सुन न ले।

★ अनन्या नैगी, कक्षा - 8
बात संगठन ग्राम सिल्ला,
कातसी, दे.दून

पागल : डॉक्टर साहब मैं चश्मा लगाकर
पढ़ती सकूंगा ना ?

डॉक्टर : हां, हां बिल्कुल।

पागल : आपका यह अहसान मैं जिंदगी
भर नहीं भूलूंगा डॉक्टर साहब।

आपने अनपढ़ आदमी की जिंदगी बना दी।

★ मुस्कान, कक्षा - 7

ग्राम सिल्ला, बात संगठन सिल्ला
कातसी, दे.दून

BOOK POST CONTAINING PERIODICALS

हिमालयी बच्चों का अखबार

RNI NO. UTTHIN/2003/10745

सेवा में,

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक डॉ अनिल प्रकाश जोशी द्वारा शिखर
इन्टरप्राइजेज सत्यभामा निवास, तरुण विहार देहरादून मोबाइल:
9412007313 से मुद्रित तथा हैस्को ग्राम शुक्लापुर,
पो.ऑ.-अम्बीवाला, बाया प्रेमनगर, देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक : डा. सुधा कवटियाल
पता : डा. सुधा कवटियाल
ग्राम-मियावाला, पो.ऑ.-हरावाला,
देहरादून-248001

सहयोग टीम : समस्त बच्चे

हमारा पता : बच्चों का अखबार
हैस्को गाँव
ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.-अम्बीवाला,
बाया प्रेमनगर, देहरादून-248001

सीमित प्रचार प्रसार हेतु